ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 167-170

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

मण्डला जिले में जैविक कृषि का आर्थिक अध्ययन

1. राज कुमार सोनवानी
2. डॉ0 सुरेन्द्र प्रताप सिंह राजपूत

1. शोध अध्येत्री– अर्थशास्त्र विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट,
2. प्राचार्य– राजीव गांधी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, रीठी–कटनी (म0प्र0) भारत

Received-07.08.2022, Revised-12.08.2022, Accepted-14.08.2022 E-mail:kumarrajsonwani@gmail.com

सारांशः – ***प्राचीन समय में हमारे देश जो कृषि जाती थी, वह जैविक कृषि का ही एक रूप था। समय के साथ बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं ने जैविक कृषि में परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अंधा–धुंध उपयोग करने से जीव–जंतुओं के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी, पर्यावरण प्रदूषण के कारण ग्लोबिंग वार्मिंग आदि अनेक विश्वव्यापी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए एक बेहतर विकल्प जैविक कृषि हो सकता है।***

कुंजीभूत शब्द– जैविक कृषि, जनसंख्या, परिवर्तन, भूमिका, रासायनिक उर्वरकों , कीटनाशकों, स्वास्थ्य,पर्यावरण प्रदूषण ।

प्रस्तावना – हमारे देश में कृषि केवल जीवन–यापन के लिए ही नहीं की जाती है बल्कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी भी है। इसलिए देश की अर्थव्यवस्था का कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था कहते हैं। देश के उद्योग–धंधों एवं विभिन्न योजनाओं की सफलता, विदेशी व्यापार, विदेशी मुद्रा अर्जन एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर करते हैं। जनसंख्या विस्फोट आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन गई है। विशाल जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराने के लिए एवं आय में वृद्धि करने के लिए किसान अंधा–धुंध रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग करने लगा है, जो मानव स्वस्थ्य पर विपरीत प्रभाव तो डालते ही हैं साथ–साथ हमारे वातावरण को प्रदूषित करते हैं एवं मिट्टी की उर्वरा शक्ति का भी कम करता है। उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिए विगत कई वर्षों से निरन्तर टिकाऊ कृषि करने की अनुशंसा की गई जिसे जैविक कृषि के नाम से जाना जाता है। जैविक कृषि एक ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों एवं घास–फूसों के अवशेष की सहायता से कृषि की जाती है। यह कृषि संश्लेषित उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग नहीं करने या कम से कम प्रयोग पर जोर देती है, जिससे मृदा की उर्वराशक्ति एवं मनुष्यों तथा जीव–जंतुओं के स्वास्थ्य सतत् बना रहता है। इस कृषि को कार्बनिक कृषि, टिकाऊ कृषि या प्राकृतिक कृषि के नाम से भी जाना जाता है। जैविक कृषि एक ऐसी कृषि प्रणाली है, जिसमें भावी पीढ़ी के पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिक सम्पतियों को नुकसान पहुँचाये बिना आज के पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य पदार्थों का उत्पादन किया जाता है। प्राचीन समय में हमारे पूर्वजों द्वारा जो प्राकृतिक खेती की जाती थी वह भी जैविक खेती का ही एक रूप था। इस प्रकार की कृषि से जल, वायु, भूमि एवं वातावरण प्रदूषित नहीं होता है तथा कृषि उपज की गुणवत्ता बनी रहती है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी बहुत सारे ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें जैविक खेती के लिए आवश्यक सभी कारकों का उल्लेख है। गौपालन भी इसका एक भाग था जो कृषि के विकास में सहायक थी। गाय से प्राप्त गोबर से जो खाद बनाते थे वह खेतों की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने का कार्य करता था। लेकिन धीरे–धीरे इसका प्रचलन कम हाते जा रहा है।

मध्य प्रदेश की लगभग 74 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं इससे संबंधित उद्योग–धंधों से जीविकोपार्जन कर रहे हैं। प्रदेश की अर्थव्यवस्था भी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से लगभग 151 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती है। प्रदेश में लगभग 70 प्रतिशत कृषि वर्षा पर निर्भर करती है। वर्षा के असमान वितरण एवं उसके अनिश्चितता के कारण प्रदेष की कृषि को मानसून की जुँआ के रूप में भी जाना जाता है।

देश में सर्वाधिक क्षेत्रफल में जैविक कृषि मध्य प्रदेश में की जाती है। सर्वप्रथम वर्ष 2001–02 मध्य प्रदेश में आंदोलन चलाकर प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड के एक ग्राम में जैविक कृषि की शुरूआत की गई और इन ग्रामों को जैविक ग्राम का नाम दिया गया। इस प्रकार पहले वर्ष में 313 ग्रामों में जैविक कृषि प्रारंभ की गई। इसके बाद वर्ष 2002–03 में प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड के 2–2 ग्रामों, वर्ष 2003–04 में पुनः प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड के 2–2 ग्रामों में जैविक कृषि की गई। इस प्रकार वर्ष 2001–02 से 2003–04 की अवधि में कुल 1565 ग्रामों में जैविक कृषि की जाने लगी। वर्ष 2006–07 में प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड में पुनः 5–5 ग्रामों का चयन जैविक कृषि के लिए किया गया। इस प्रकार 2006–07 तक मध्य प्रदेश में कुल 3130 ग्रामों में जैविक कृषि किया जाने लगा। वर्ष 2015 में भारत में 7.23 लाख हेक्टेयर पर जैविक कृषि की गई थी, जिसमें से 2.32 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल सिर्फ मध्य प्रदेश में था। वर्तमान में मध्य प्रदेश में 17 लाख 31 हजार 653 हेक्टेयर में जैविक कृषि की जा रही है।

मध्य प्रदेश का मण्डला जिला भी उक्त तथ्यों से अछूता नहीं रहा है। मण्डला जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 8771

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

वर्ग किलोमीटर में से लगभग 279000 हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती है, जिसके अंतर्गत रबि एवं खरीफ दोनों फसलें शामिल हैं। बहुत कम क्षेत्र में जायद की फसल भी उत्पादन किया जाता है। इस प्रकार जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के लगभग एक तिहाई भाग का उपयोग कृषि कार्य में किया जाता है। मण्डला जिले में कृषि उपज का उत्पादन केवल स्थानीय उपभोग के लिए ही नहीं वरन् अन्य प्रदेशों एवं विदेशों में निर्यात के लिए भी किया जा रहा है। मण्डला जिले में जैविक कृषि को प्रोत्साहित करने के लिए 47 हेक्टेयर भूमि जवाहर लाल नेहरू कृषि विज्ञान केन्द्र मण्डला मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की गई है एवं जिले में 3106 हेक्टेयर में जैविक कृषि की जाती है।

मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के रकबा का विवरण

क्रमांक	वर्ष	रकबा हेक्टेयर में
2	2017–18	1156881
3	2018–19	91830
4	2019–20	1161015
5	2020–21	1637730
6	2021–22	1731653

स्रोत–https://www.bhaskar.com/local/mp/news/farmers-are-not-getting-market-middlemen-are-earning-profits-know-a-to-z-130038493.html

मध्य प्रदेश में जैविक कृषि के रकबा का ग्राफ

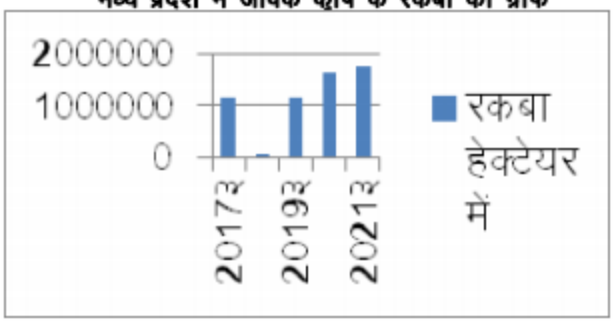

शोध के उद्देश्य – इसका उद्देश्य निम्नलिखित हैं **–**

1. मण्डला जिले में जैविक कृषि के वर्तमान स्थिति का अध्ययन।
2. कृषि लागत को कम करने में जैविक कृषि की भूमिका को स्पष्ट करना।
2. जैविक कृषि के महत्व पर प्रकाष डालना।
3. जैविक कृषि का कृषकों के आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन।

परिकल्पना – प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं **–**

1. कृषको को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में जैविक कृषि सहायक है।
2. जैविक कृषि रोजगार मूलक होती है।
3. जैविक कृषि पर्यावरण संरक्षक कृषि पद्धति है।

शोध प्रविधि – अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दानों प्रकार के आंकडों का उपयोग किया गया है। इन आंकड़ों का संकलन कर उनका सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया है।

जैविक खेती से लाभ –

1. **संश्लेषित उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करना–** जैविक कृषि को अपनाने से रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता में कमी होती है क्योंकि इसमें रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खादों एवं कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है जिससे कृषकों को उन पर कम व्यय करना पड़ता है।
2. **भूमि की उर्वराशक्ति को बनाए रखना –** मिट्टी की उर्वरा शक्ति के बनाये रखने के लिए उसमें पोषक तत्वों का उपस्थित होना नितांत आवश्यक है। इसमें लगभग 17 पोषक तत्व होते हैं, जो कृषि उपज के उत्पादन एवं गुणवत्ता को निर्धारित करने के लिए आवश्यक होती है। लेकिन हरित क्रांति के बाद से नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटेशियम पर ही ध्यान दिया गया जिससे अन्य पोषक तत्वों में भारी कमी आ गई है। जैविक कृषि ही एक मात्र विकल्प है जो मृदा की उर्वरा शक्ति

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

को बढ़ा सकती।

3. **कृषि लागत को कम करना –** जैविक कृषि के लिए उच्च कीमत वाले बीजों की आवश्यकता नहीं होती है। इसमें देशी बीज का ही उपयोग किया जाता है। पहले साल जो बीज बोये गये हैं उसे ही आगे के सालों में भी बाये जाते हैं। इसमें उपयोग किये जाने वाले वाले जैविक खाद मुख्यतः पशुओं के मल–मूत्र, फसलों के अवशेष, पेड़–पौधों के अवशेष से एवं कीटनाशक पेड़–पौधों से बनाया जाता है। इनके निर्माण में कृषकों को रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों की तुलना में बहुत कम व्यय करना होता है। इसमें यंत्रो का उपयोग भी नहीं किया जाता है। जैविक कृषि में कम सिंचाई आवश्यकता होती है क्योंकि इसमे कम जल के उपयोग से ही कृषि की जाती है। अतः जैविक कृषि की मदद से कृषि लागत को कम किया जा सकता है।
4. **रोजगार का साधन –** हमारे देश के कृषक जैविक कृषि को अपनाकर दूसरे लोगों को भी रोजगार दे सकते हैं, क्योंकि इसमें अधिक संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती है।
5. **जीव–**जंतुओं के स्वास्थ्य को सतत् बनाए रखना **–** जैविक कृषि में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद एवं कीटनाशकों के उपयोग करने से मृदा, जल, वायु एवं वातारण प्रदुषित नहीं होती है। अतः इस कृषि को अपनाकर जीव–जंतुओं के स्वास्थ्य को सतत् बनाए रखा जा सकता है।
6. **अच्छी गुणवत्ता के कृषि उपजों का उत्पादन –** जैविक कृषि से भूमि के उर्वरा शक्ति में भी वृद्धि होती है जिससे उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। इससे कृषकों की लाभ में वृद्धि के साथ–साथ उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर भी इसका विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि ये पोषण एवं एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं।
7. **अधिक लाभ –** राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में जैविक उत्पादों की मांग में तेजी से वृद्धि होने के कारण इनके उच्च मूल्यों पर विक्रय होने से कृषकों की लाभ में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2019–20 में भारत में जैविक उत्पाद का कुल निर्यात 6.39 लाख मैट्रिक टन किया गया था, जिसका मूल्य लगभग 4686 करोड़ रूपये था।
8. **ग्लोबल वार्मिंग का समाधान कारक –** हमारे देश ही नहीं समूचे विश्व में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से ही ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है, जैविक कृषि इसका एक समाधान कारक हो सकता है क्योंकि इससे पर्यावरण प्रदुषित नहीं होती है।

जैविक कृषि से नुकसान–

1. जैविक कृषि के लिए अधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है जिससे प्रायः उत्पादन में कमी आती है।
2. जैविक कृषि के विषय में जागरूकता में कमी की वजह से कुछ कृषकों के लिए यह आज भी एक नई कृषि पद्धति है।
3. इससे कम उत्पादन होने के कारण यह बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त नहीं है।
4. जैविक कृषि से उत्पादों के भण्डारण के लिए आवश्यक उपकरणों एवं कृतिम परिरक्षकों की कमी के कारण इनके आसानी से खराब होने की संभावना बनी रहती है।
5. जैविक उत्पादों को विक्रय करने के लिए स्थानीय स्तर पर बाजार उपलब्ध नहीं हैं।
6. जैविक उपज का कृषक स्वयं प्रसंस्करण कर विक्रय करने का व्यय वहन नहीं कर पाते।
7. जैविक कृषि करने वाले कृषकों को सरकार की ओर से अनुदान प्राप्त नहीं होती है।

जैविक कृषि को प्रोत्साहित करने में सरकार की रणनीति–

1. **परंपरागत कृषि विकास योजना –** इस योजना का प्रारंभ 2015 में किया गया था। यह सतत् कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन के उप मिशन 'मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन' का एक प्रमुख अवयव है। इसके अंतर्गत जैविक कृषि में 'क्लस्टर दृष्टिकोण' एवं 'भागीदारी गारंटी प्रणाली' प्रमाणन द्वारा 'जैविक ग्रामों' के विकास के बढ़ावा दिया जाता है।
2. **मिषन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट फॉर नॉर्थ ईस्ट रीजन–** इस योजना को 2015 में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा राज्यों में प्रारंभ किया गया था। यह एक केंद्रीय क्षेत्रक योजना है, जो सतत् कृषि के लिए राष्ट्रीय मिषन के अंतर्गत ऐ उप मिशन है। यह जैविक उत्पादन का 'प्रमाण' प्रदान करके उपभोक्ताओं में उत्पाद के प्रति विश्वास उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
3. **एक जिला एक उत्पाद योजना–** इसका उद्देश्य स्थानीय स्तर पर छोटे एवं सीमांत कृषकों को जैविक कृषि को बड़े पैमाने पर उत्पादन करने एवं उनकी अधिक पारदर्शिता से बिक्री मो प्रोत्साहित करना है जिससे जिले स्तर पर रोजगार उत्पन्न हो सके। मण्डला जिले में इस योजना के अंतर्गत कोदो–कुटकी का चयन किया गया है।
4. **जैविक ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म www.jaivikkheti.in–** यह सीधे खुदरा विक्रेताओं के साथ–साथ थोक क्रेताओं एवं जैविक कृषकों को जोड़ने की दिशा में काम रहा है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

5. **जैविक प्रमाणीकरण–** मध्य प्रदेश में जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण के लिए म.प्र. राज्य ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन एजेंसी की स्थापना भोपाल में की गई है। इसमें जैविक कृषि से पहले उसका प्रमाणीकरण कराना होता है, इसके बाद ही कृषक अपने जैविक उत्पाद को विदेशों में निर्यात कर सकते हैं। जैविक उत्पादों को पैकेटों में विक्रय किया जाता है, जिनमें उत्पाद की जानकारी, सर्टिफाई संस्था का मोनो, पंजीयन क्रमांक आदि अंकित किये जाते हैं।
6. **जैविक नीति–** मध्य प्रदेश सरकार द्वारा जैविक कृषि के लिए जैविक नीति 2011 पारित की गई है। इस नीति के अंतर्गत प्रदेश सरकार गौ पालन करने वालों को 1500 से 2000 रूपये देने एवं जैविक उत्पादों के खरीदने की तैयारी कर रही है

जैविक कृषि हेतु सुझाव–

1. जैविक कृषि के लिए देशी बीज का ही उपयोग करना चाहिए।
2. पहले वर्ष में जो बीज बोया गया हो, उसे ही आगे के वर्षों में बोया जाना चाहिए।
3. जिन खेतों में जैविक कृषि की जा रही है, उनमें दूसरें खेतों का पानी बहकर नहीं आना चाहिए।
4. जैविक उत्पादों के विक्रय के लिए सरकार को स्थानीय स्तर पर व्यवस्था करना चाहिए।
5. जैविक कृषि करने वाले कृषकों को प्रोत्साहन स्वरूप सरकार द्वारा अनुदान दिया जाना चाहिए, जिससे जैविक कृषि को करने के लिए अधिकाधिक संख्य में कृषक प्रेरित होंगे।
6. लोगों में जैविक कृषि के प्रति जागरूकता की कमी है। अतः जैविक कृषि के बारे में व्यापक प्रचार–प्रसार करके लोगों को जागरूक करना चाहिए।

निष्कर्ष– वर्ष 1990 के बाद से भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति के कारण भोजन आपूर्ति के साथ–साथ पौष्टिक खाद्यान्न की मांग में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। वर्तमान में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से प्रकृति का पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित होता है एवं भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है जो मानवीय एवं अन्य जीव–जंतुओं के स्वास्थ्य के लिए घातकहै। जैविक कृषि में पारिस्थितिक तंत्र से जैविक एवं अजैविक पदार्थों के आपसी आदान–प्रदान के चक्र संचालित होता है। इससे जल, वायु, भूमि एवं पर्यावरण प्रदूषण नहीं होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.theruralindia.in/2020/09/%20What-is-organic-farming.html
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%88%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95_%E0%A4%96%E0%A5%87%E0%A4%A4%E0%A5%80
3. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-analysis/organic-agriculture-beneficial-for-health
4. https://leverageedu.com/blog/hi/jaiwik-kheti/
5. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-analysis/organic-agriculture-in-india-situation-and-direction
6. http://mpkrishi.mp.gov.in/hindisite_New/gudwatta_Jaivik_Kheti.aspx#labh
7. https://hindi.krishijagran.com/farm-activities/importance-and-benefits-of-organic-farming/
8. https://agricoop.nic.in/sites/default/files/MP37_Mandla_07.06.2013.pdf

*****